श्रीः ।

# श्रीसीतारामनखशिख.

।जिसको

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

मुम्बई बुकसेलर

अयोध्याजी ने

**मुम्बई**

टाइपसे सुशोभित कराकर

"लक्ष्मीनारायण" यन्त्रालय में

छपवाया.

MORADABAD.

श्रीगुरुवेनमः ॥

श्री सीतारामाभ्यां नमः।

# श्रीसीतारामनखसिख !

सोरठा ।

पिंगलमेंनहिंहोस, काव्यरीतिजानीनहीं।
मोहितुम्हारभरोस, श्रीविदेहनृपनंदिनी १
औगुनविस्वाबीस, यद्यपिगुनएकौनहीं ।
सियपदरजधरिसीस, प्रेमसखीकहजथामति २

मत्तगयन्द—चंचलता सिगरीतजिके थिरहैरहुतू यहबातभली है। सेउसियेप-दपंकजधूरिसजीवानिमूरि विहारथलीहै ॥

वारहिबारासिखावति है अपने मनको यह प्रेमअली है। ठाकुररामलला हमरे ठकुराइनिश्रीमिथिलेश लली है ॥ १ ॥

घनाक्षरी–चिन्हितप्रकासमान अंकुसादिचिन्हनितें बसैप्रेमसखीमध्यअंतर उरोजके। जाकीनखराजीविधुह्वैकै संभुसीसराजी आँगुरी अमलमान मरदतमनोजके॥ सरनसिधारैं भवसिंधुतेंउधारैंवेदकहतपुकारैं ये दिवइया मुक्तिमौजके। वानीवारिजासन भवानी औ वृषासनजू रहत सरन सिया चरन सरोजके॥ २॥

एड़ीकी ललाई जुत जावक सुहाई मानो कंचन कटोरी भरी पावकसों ताईहै।

धरामें धरतपाय नैनतरसायउठैं भूमैंप्र-
तिविंवनकी फैलत ललाई है ॥ नूपुरकी
झालरैं जराऊ जोति हीरनकीं देखिप्रेम
सखी ताकी उपमा बताई है। आई रघुना
थकी पठाईपाइ गहिरही संध्यारागरंजित
नखतसंग ल्याई है ॥ ३ ॥

कैधौं पारिजातके सुमन की ये पाखुरी
हैं जावक सजोग अनुराग रस भीनीहैं।
जग चतुराईकी कुसलताई पाई तव सु-
खमासमूहको विभाग विधि कीन्हीं हैं॥
पतिको अतनजानिरतिकंजढिगआनि पं-
चवानवाननकी गासीधरिदीन्हीं हैं। वि-
धिहरमेरे दृसभालन कीभागथली प्रेमस-

खीसिया पद आँगुरी नवीनी हैं ॥ ४ ॥

परम अशंक ए सशंकरहैं राहुडर दिन दुतिमंद ए अमंद तमहारीहैं। वै तो सकलंक ए कलंकअघ दूरिकरैं वैहैंछपानाथ ए अनाथनाथ भारीहैं॥ घटत बढततिथि पांइपांइ रातदिन एतो एकरस जोति जागैं न्यारी न्यारी हैं। प्रेमसखी मेरीजानासिया पद नखचंद कोटि कोटि चन्द ते दुचंद छबिधारी हैं ॥ ५ ॥

तापनि सतायो फिरै दशौदिशिधायो जो सरनतकिआयो ताहि अभैपद देतुहैं। इनहींकी आड़ भवसिंधुपार जाइवेकों प्रेम सखी विरच्यौ बिरंचि श्रुतिसेतु हैं॥ पूज्य

ए पुरारीके मुरारीकी भगतिहेतु सेवैं सिद्ध जोगी सुरअसुर समेतु हैं। जनक लड़ैती जूके गोरे गोल गुलुफ ए दसरथलालके चोराये चितलेतुहैं ॥ ६ ॥

बडे छोट जीवनके भागको भँडारकि-धौं सुखमाअगार जाहि सेवत सिंगारहैं। बिछुवा को नादतो हँसत कलहंसनि कों नूपुरकी धुनि सुनि मार बेसुमार हैं ॥ गू-जरी चमक देखि चपला चोरावैगात जे हरिजरायमथि काढे रविसार हैं। प्रेमस-खी सियाजूके भूषण समेत पाय हमसे गरीब निराधार के अधार हैं ॥ ७ ॥

अरसातछन्द—हैं युग खम्भए कंचन

के पलनापग झूलन आए सिंगारहैं। प्रेम सखी मन डोरी तनी गति हंसन कीसी झुलावत मारहैं ॥ गावती गीत अली बि छिया रघुनन्दन नेह नचावन हार हैं। पीन सुढार बनी चिकनी ये विराजत जा-नुकिजानु उदार हैं ॥ ८ ॥

शेश महेश औ बानी बिरंचि थकेगुण गावत जेते प्रवीनहैं। सेइरहेपदकीरजकों सनकादिक जो पदचाहैं नवीनहैं। प्रेम सखी मनबुद्धि मिलिन्द रहैं सियके पद पंकज लीनहैं। देखत पायनकी महिमा सुखपाइ नितम्ब भये अतिपीन हैं ॥९॥

घनाक्षरी—देव नरनारी विधि शक्र त्रि

पुरारी प्यारी जुरिजुरि आपुसमें कहत प्र-
वीनीहैं । कंचन कलाकीजोति जीती च-
पलाकी इन मदनललाकी अबलाकीछबि
छीनीहैं ॥ रामरसखानि मन मोहिबे की
मोहनी हैं सोहनी जगतप्रीति रीति अति
भीनीहैं । नैन तरसात डीठि लाले लचि
जात प्रेमसखी बलिजात देखि सिया क-
टिखीनी हैं ॥ १० ॥

मत्तगयन्दछन्द—प्रेमसखी धौं पटम्बर
ह्वै पर्‌यो पायन आइ सोहागति याकों ।
बूडे हरे रंगमें बिलसैं जमुनाजल ज्यौं
प्रतिबिम्ब दियाकों ॥ चारु तनीकी घनी
सुखमा जिनतें न छुटै मनबांधो पियाकों ।

शोभित हैं लहँगो कटिमूल हरै अघ शूल दुकूल सियाकों ॥ ११ ॥

घनाक्षरी--देखि छबि रसनाकी चकित विरंचि कहैं हमते न होइ यामें औरैचतुराई हैं । एक एक चन्द्रिका में चन्द्रमा अनेकनकी ग्रहनसमेतिकी सिमिटिछबि छाईहै ॥ सियाकटि मूलराजै दामिनीबि लोकिलाजै धुनिकलहंसनते अधिक सुहाईहै । प्रेमसखी मेरीजान मदनमहीप आजु बिश्वके विजयके हेतु दुन्दुभी बजाई है ॥ १२ ॥

सुरतरुपानतें ललित अनुमानजाको इहैधोप्रमान बिधि सिगरी सयानीको ।

सुखमाको सदन सकल गुणखानि किधौं सोहैभाग भजन मदनअभिमानीको। प्रेमसखीप्रेमको पयोधिनिधि मेरीजानदया को निधानहै धौं कर्ममनबानी को। छूटै भवत्रास आसु जननी जठरबासु ध्यावत उदर जो सियाजू जगरानीको ॥ १३ ॥

मत्तगयन्द--प्रेमसखी मतिमन्द महा सपने कवहूं नहिं देखनपाई। नाभिहितें उपज्यो विधिबापुरों जाइकहा मुखचारि सोगाई। बारहिंबार विरंचिबधू सबढूंढि थकीं उपमानहिं पाई। जानत रामलला रसपानि सियाशुभनाभिकी सुंदरताई १४

कवित्त--नीलम नीली कसी लसी है

मध्यकंचनके तनजातिकै धौंसिंगारपांति साजी है। आई स्यामताई की निकाई सबसिमिटिकै जाहि देखिदेखि रोमरोम पियराजी है ॥ झीनिदरसातहै विसाल छविसरसात रूप सुधासरमेसेवारसी विराजी है। प्रेमसखी मेरीजानसुखमासमूहराजी गुनगनराजी धौं सियाकीरोमराजीहै ॥ ॥ १४ ॥

सवैया--प्रेमसखी सुखमा सरते उमड़ी छविचारु तरंगभलीहैं। प्रेमप्रभाह्वैत्रिधादरसै जिनपै परिडीठिहलीनचली है॥ देखेवनैनाहिंजातकही पियके चितकी विश्राम थली है। धारे मनोहर रूप अली

परमादिकि धौं सियकी त्रिवली है ॥ १५ ॥

श्रीफल है कि धौं प्रेम सखी ये मनोरथ के फल रामललाके। उन्नतपीन कठोर महाछवि भाजन हैं कि धौं कामकलाके ॥ मोहनमंत्रप्रकासकसे जुग सिद्धि प्रसिद्ध हिये कमलाके। नैनसरोजकसे पियके ये उरोजनवीनसिया नवलाके ॥ १६ ॥

कवित्त—वोरी रंगनील है किशोरीजूके गोरे गात छवि सरसात देखि कंचुकी सुहाई है। नगनजटित बूढी चारु जरतारिनकी असित निसा में ज्यौं नखत छविछाईहै ॥ रुचिरवनी है नेहसो धेनसनीहै जामें सुखमा घनी है प्रेमसखी मनभाईहै ।

उरजनवीन तरुचारीहै विहारीदृग मृग फादिवेको प्यारी जारीसीलगाईहै ॥१७॥

सवैया--सोहत नीलनिचोलनये घन अंतरमैं दुति ज्यौं चपलाकी। गाँथे अनेक अमोलनगें जिन छीनिलई छविचन्द्र कलाकी॥ प्रेमसखीमुकता गन स्वच्चल रैलरकैं विरचीकमलाकी। दीठिहलीनचली सियके उरहारबिलोकतरामललाकी

वाहु सियाकी विसाल सखी सुकुमारी मृनालतें कोमलताहै। कंचनरंचन जानि परै परसै विनु क्यों रंगकी समता है॥ प्रेमसखी अवलंवनुहै हारेदासनकी प्रिय कलपलता है। मालसी लालगिरे बिलसै

दरसै घन अंतर ज्यौंतडिता है॥ १९॥

कवित्त--कंवुक कपोत सकुचात जात देखि देखि सियाजूके कंठकी निकाई अधिकाई है। स्वच्छताई सुकुमारताई वानि आई जाके पानपीक वाहिरे झलकत झाई है॥ मनिमुकतानके अनेकभांतिभूषनसों भूषित अधिकते अधिक छविछाई है। प्रेमसखी मेरीजान सुखमा सुदेसयहै पियमन अचल जगीरकरिपाईहै॥ २०॥

सवैया--आनन इंदु अनेकनकी छबि छीनिलई सुखमावरजोरैं। दैवनकी नरदेवनकी सियको मुखदेखित्रियात्रिनतोरैं॥ दीठिसों मैलोनहोइ कहूं सकुचाइ बधूसि-

गरीदिगमोरैं। प्रेमसखी पियके चषचोर करैं पलकै परिपाइनिहोरैं॥ २१॥

कवित्त--प्रेम वसुधासे सिय अधर सुधासे वैन ललित सुधासे प्रिय अधिक सुधासे हैं। सहज हँसोहैं अनखो हैं न कदापिहोत विंवासे अरुनहैं कमल मोद वासे हैं॥ माधुरी अनूप जानै प्रीतमके मन नैन रहत निरंतर जो पियत पियासे हैं। देखि देखि प्रेमसखी वारने करतप्रान जनम अनेक के अखिल अघनासेहैं॥ २२॥

सवैया--दंतनकी अवली सियकी सम कुन्दकी पाखुरीके अनुमानहैं। कोरैंकहूंमुसुकातकढैं मनिहीरनके दविजात गुमान

हैं॥ चीकनेचौगुने सौगुनेसेत विलोकिथके विधिसे बुधिमानहैं। प्रेमसखी केहिभांति कहैं मतिमंदमहा सबभांतिअजानहैं २३

कवित्त--जगमें निकाई शुकनासिकाई पाई सिय नासिका निकाईपै सिमिटिछबि आईहैं। मुकुताकलित सोहै ललित ललाम जामें लटकन लटकि अधर छबि छाईहै॥ हलनि हिये में वाकी भरि गई प्रेमसखी जातन अनेकहू कढत कठिनाई हैं। कैसेकरिगावै बुधिबानीमो न आवैछवि देखे वनिआवै जिनपाई तिनपाई है।२४।

नैन अनिआरे तारे पुंडरीक पानसारे सिय पूतरीनपै ह्वैरफ गनवारे हैं। कछुक

जरारेसीलसागर सुधासुधारे वरुनी बि-
शालधारे जोरछोर वारेहैं ॥ दीनपै सनेह
वारे प्रीतमके प्रानप्यारे उपमा न पावत
विरंचि रचि हारे हैं । मीन मृग खञ्जन
बनाए विधि प्रेम सखी वारि वन व्योम
बसैं लज्जित विचारे हैं ॥ २५ ॥

सवैया--वा अनियारी विलोकनि की छबि गाइबे को विधिकी बुधिहीन है। प्रेमसखी मिथिलेशसुताकी कटाक्षकेकोर भए गुन तीनहै ॥ मीचु समान दशानन की सुरधेनु समानि सुपालत दीन है। रूपसुधाकी तरंगिनी सो निशिद्योस जहां हरिको मन मीन है ॥ २६ ॥

कवित्त–रेखा सीस घनस्याम कुटिल कमान ऐसी सुरमुनि वैभव वखानै चारौ वेदहैं। ऊंचीसी करत विधि आदि जग होतसब नेकु ढीली होत कैजात गुनछेद हैं॥ करत हरत प्रतिपालिवेको प्रेमसखी कोटि अंडजाके कहूँरंचकनखेद हैं। भृकुटी विलास महारानीजूको मेरीजान हरिमनमृगवाँधवेको फंद भेद हैं॥ २७॥

सवैया–भाल बिसाल सियाको सखी सुखभाजनसो छवि पूरिरह्यो है। भाग सुहाग को पीतम पार न पावत जाते अपार कह्यो है॥ भूषन भूषित प्रेमसखी उपमा न लह्यो विधि हेरिरह्यो है। कोटि

उपाय करै कबहूं नरसों करसों विधुजात
गह्यो है ॥ २८ ॥

कवित्त--अमलकपोलपैरीतेरीसोंबखानै
कौन देखै वनिआवत तरौननसमेतहैं ।
ढके नील सारीसों किनारी जरतारीकोर
अलकैं वलित ह्वै अधिक छवि देत हैं ॥
तरानितनूजाबिधु व्याल लघुलागे मोहि
उपमा न दीन्ही प्रेमसखी एहिहेतहैं ।
एईबड़भागी जाहि सियछवि प्रियलागी
परम अभागी जे अनतचित देतहैं॥२९॥
मेचक सघन सुकुमारहैं सेवार हूं ते सि-
याजूके सीसके विराजत विसालवार ।
मोर पखवार तमधार मरकततार पन्नग-

कुमार रचे कोटिकोटि करतार। उपमा-
के हेत प्रेमसखी वुधिवान प्रभु करत
रहत नित नए नए उपचार ॥ मोर प-
च्छडारै त्वचपन्नग नवीन धारै मनमैं न
आवै तौ वनावै विधि वार वार ॥ ३० ॥
गाँथेसेतअरुन कुसुमगन प्रेमसखी चा-
रिफलदेनी जाकीउपमा त्रिवेनीहै। कंचन
सिलापै काली व्यालीसी विराज मान
सुखमा समूह धौं हि रेफनकी श्रेनी है ॥
सकल सिंगार सार धारसी धसी है कीधौं
पीठि पै लगाइ राखी मदन निसेनी है।
मणि मुक्तान सों विभूषित विविध भांति
सियाजूकी राजत विलासतर वेनीहै ३१

झीनीहूते झीनी है नवीनी नित नित होत नीलरंग सारी प्यारी सुधासों सुधारी है। सब सुखकारी जापैं मेघमाला वारि डारी दामिनीसी चहूँघां किनारी जरतारी है॥ भागन की भाग ऐसी सुखमा सोहाग ऐसी सियाजू कृपाकै जाहि निज तन धारी है। उपमा न आवै तौ बतावै कैसी प्रेमसखी देखि देखि होत बारबार बलिहारी है॥ ३२॥

सवैया—है जलकी तन या कमला विमला पितु तौ जड जीउ पषान है। वा नीरहै बकबादिनमें पति सोच दुखी रति जानै जहान है॥ प्रेमसखी मिथिलाधिप

की तनया उपमा कहँ को जग आन है। है न भई नहिं होनेउ है तिहुँलोक तिया सिय रूप समान है ॥ ३३ ॥

है रसना तनकी सुखमा उपमा कहबे कहँ कीन्हीं फनीश हैं। नाकहि जाइ रहे सकुचाइ हिये अनखाइ किये बहु शीशहैं॥ शेष सियापगके नखकी छबि नूतन गाइ थके जगदीशहैं। प्रेमसखी बल कोटिकरै मकरी सों कहूं तरि जात न दीसहै॥३४॥

दोहा।

सियछबि उरमै पीठकै उफनाती भरिपूरि।
प्रेमसखीतासोंकही शिरधरिसियपदधूरि १
प्रेमसखीतियाद्दगलगे अँगरँगमैलोजौन।

बचनठीमसैमैदये सहैसियाबिनकौन॥२॥

श्लोक—ऐश्वर्यरमक्षय गातिं परमपदं वा कस्मैचिदंजलिभरेवहते वितित्य। अस्मैनकिंचिदुचितंकृतामित्य पंत्वंलज्जसेक व्ययकोपमुदारभावः ॥ १ ॥

दोहा।

मीठेऊ मीठे लगे फल सेवरी के राम।
प्रेमसखीकैपैन्हियै लालकवितकीदाम १॥
प्रेमसखी सबजगकहै,बारबार घनश्याम।
कहां बलाहकबापुरो,कहांरामआभिराम २

सवैया—नितही कटि पीत दुकूल लसै बिजुरी बदरान छपै क्षनमें। उरमें मणि माल बिहारकरै बक पांति उडाय चलै

तिनमें ॥ अँग श्यामता प्यारेकी प्रेमसखी रसएकरहै न रहैउनमें। छबि देखियेजैसी लला तनमें दुति पाइयै वैसी कहूँ घनमें १

घनाक्षरी—रतन किरीट देखि प्यारे रघुनाथजू को प्रेमखखी उर चटपटी सी परत है । जागत असन सैन जगमग जोति वाकी हिये में बसत नैक टारे न टरत है॥ खिरकी में फिरकी सी फिरत बधूटी सब उरमें उमँगि मन धीर ना धरत है। सुखमाकोधाम अभिरामहूंको अभिराम कोटिरविसोमके गुमानकों हरतहै २

श्रेनीधौ द्विरेफनकी दिगकंज वाहि चली पलग कुमारीधौं मयंक सुधापागैरी।

मथिकै सिंगारसार विधिनैनिकाढ्यो प्रभु सीसपर ढारयो धसीधारैं जोति जागैंरी॥ प्रेमसखी मेरीजान हृषीकेस केसहैकै सुखमा समूहमुख छ्वैकै अनुरागैंरी। कुंडल समीपकारी कारी घुघुरारी आली अलकैं बिलोकि नेकु पलकैं न लागैंरी ॥ ३ ॥

कुंडलकी झलक बिलोकि रघुनाथजू की चित चकचौंधे दृग चुम्बकसे लागेहैं। मंद मंद डोलैं मेरे हियतैं न डोलैं नेकु लोकलाज आदिक भभरिसब भागेहैं॥ नींद भूख प्यास जिन इंद्रीगणस्वासजीते तेऊ छबिदेखि तनमन अनुरागे हैं। प्रेम सखी तियनके काहियै कठिनप्रान पलक

न ओटहोत रहत अभागे हैं ॥ ४ ॥

सवैया--दर्पनसे प्रभुलोल कपोलसखी अवलोकतही रहिये। नैन समेत फँसेमन वुद्धि कहौ उपमा अबक्यों काहिये ॥ अंचलओट भये सजनी लघुमीन ज्यौंवारि विनाद हिये। प्रेमसखी हियमाहबसौतिन को फिरि साधनका चाहिये ॥ ५ ॥

भाल बिसाल सियाबरको दृग देखि कुअंक मिटैं निजभालके। कुंकुमकी रचना कबहूं हरिचन्दन चित्रसुगंध रसाल के ॥ भाग बडे तिनके काहिये जे धरैं तुलसीदल मस्तकलालके। प्रेम पयोधिमें प्रेमसखी परैतोरिफँदा सिगरे जगजालके

कवित्त--प्रेमसखी प्रमदा कहतनर दे-
वनकी फूल धनुधारी कहा करत बिचारो
है। करसर धनुष चढावै ऐंचि कानलावै
मारै तब जिन्है करिपावै मतवारोहै॥ रे-
खा शीश घनश्याम जीवे सावधानहूंको
तनक बिलास जाके परबश पारो है।
बेधै अनियारे दृग अचरज यह राम भृ-
कुटी कुटिलाहिये बेधति हमारोहै॥७॥

सवैया--राजिवनैनके नैनन की छबि
जानत नैन बिलोकि भये धनि। तैसै बि-
साल बडी वरुनी दृग सुंदरता साखिआई
सबैबनि॥ प्रेमसखी जिनकी सुखमा जुग
कोटिलों शेश न आपु सकै गनि। मीन

मृगा अरु खंजन वापुरे दै उपमा वदना-
म करौ जनि ॥ ८ ॥

प्रानपियारेकी प्रेमसखी शुभनासिका
पैजब डीठि परैरी । उन्नतस्वच्छ सुढार
महाहिय तेछबि नेकु न टारे टरैरी ॥ कोटि
मनोजकी सुंदरता जिनपै बलिहारिकै दूरि
धरैरी । आली बुलाककी डोलनिकीसुधि
आवतमोहिं सुमार करैरी ॥ ९ ॥

कवित्त--राते राते अधर सुधासे वर-
सत वैन चक्रित विलोकै जाहि फूल ध-
नुधारी है । वंधुक सुमनकी ललाईयौ
सिमिटि आई जामै फसिरही डीठि टरत
न टारी है ॥ देखे वनिआवै कहि आवै

कैसे प्रेमसखी जानत रसिक जो परम अधिकारी है । चन्द्रमा मयूषहूतें मधुर पियूषहूतें प्यारे को अधर मधु पियत पियारी है ॥ १० ॥

प्यारे के दसन देखि देह दसा भूलि जात कुंद पखुरीन तें अधिक छवि वाढी है । रंचक कढ़त कोर दामिनीसी दौर दौर दाडिम दसन वारी ठौर ठौर ठारी है ॥ पलकै न लागै रोम रोम अनुरागैं मानो चित्रकीसी पूतरी चितेरे लिखि काढी है । लोकलाज छूटी प्रेमसखी कुल कानि टूटी गरेपरी राम मृदु हाँस फाँस गाढी है ॥ ११ ॥

आछे २ मैंन मैंनवारतें सरसपैन तीनौ ताप छूटै नेकु पावत दरस हैं। आरसीसे अमल कपोलगोल चंचलहैं झलकतझाईं मध्य कुण्डल परसहैं ॥ चिबुक श्रवण भाल नासिका बिलोकिआली पलकैं परत मानौ बीतत बरस हैं। आनन्दकेकन्दहूँ ते नील अरविन्दहूँते रामचन्द्र मुखचन्द्र चन्द्रौंहैं सरस हैं॥ १२॥

प्रेमसखी गाइ गाइ छवि नित नई नई पावत न पार बुद्धिवानी सत माथ की। विधना चितेरा कीन्हे जगत विचित्र चित्र पूतरीसी ह्वै रह्यौ कलम धरि हाथ की ॥ कंवुदर कंठते निकाई अधिकाई

यह कहत वधूटी देखि देवनके साथकी।
सुखमा समूह सीवाँ सकल सिंगार सींवा
गुनगन सिंधु सींवा ग्रीवा रघुनाथकी १३

सवैया--उन्नतअंश विशालभुजा रघु-
नाथकी मानौ सिंगारकी धारहैं। दुष्टप्लवं-
ग भुअंग मसी द्विज दीननकी पितुमात
अधारहैं॥ भूषन भूषित प्रेमसखी सिय
के हियकी अतिसय प्रियहारहैं। बानधरे
धनु शोभित हैं दलै दासन के दुखदीह
अपार हैं॥ १४॥

कवित्त--आयत विसाल उर प्यारे रघु
नाथजू को विधना विसाती छबि हाटसी
पसारे हैं। मनि मुकुतानके विराजत अ-

मोल माल पांति पांति आए धौं सिमिटि नभतारेहैं॥ वैजंती वनमाल तुलसीसुमन माल कौस्तुभादि करत प्रकाश न्यारेन्यारे हैं। वेद तत्वबोधक सियाकी मध्य रेख सजै प्रेमसखीजापैतृण वारिफेरिडारेहैं १५

नाभी की निकाई जाति कौन पहँ गाई जातैं उपजैं विरंचि जो पसारे जगजालहैं। रूप सुधा वापिसी विराजत गँभीर धीर रोमनकी राजी जापै सूक्ष्मसे बाल हैं॥ त्रिवली निसेनी सी अधिक सुख देनी श्रेनी हंसन की आवत विचित्र मनी माल हैं। प्रेमसखी मेरी जान सुदृढ बनायो यह पादप सिंगार को ललित आलबालहैं १६

सुखमा सदन जाहि सहस वदन कहैं तनु मध्य बारे सब लज्जित विचारे हैं। विधुसे दुकूल मूल मूल सो उखारे लेत त्रियनि विलोकि कै तिनूका तोरि डारे हैं॥ जात रूप किंकिनी जडाऊ मनि हीरनकी शोभा करि बैठे आनि मानो ग्रह तारे हैं। प्रेमसखी रामजूकी सूक्ष्म सुढार काटि देखत विरंचि धरि अकल किनारे हैं॥१७॥

जंघा जानु युगुल विलोकि रघुवीर जूकी उपमा को विरचि विरंचि पछितात हैं। कदली के खम्भ जे बनाए बहुतेरे ते तौ मानि लघु आपुको कम्पत पात पात हैं॥ मत्त गजराजनके कीन्हें सुण्डादंड

फेर वापुरेलजायकै निकारिदए दांत हैं। विधिसो न आवै तौ बताबैकैसे प्रेमसखी इनकी समानमोहि एईदरसातहैं ॥ १८ ॥

सवैया—गोलमनोहर श्री रघुनाथ के गुल्फविराजत सुन्दरगूढहैं। लालित हैं कमला करसों मनि नूपुरआदि सिंगार अरूढ हैं ॥ वेद पुरान पढै तौ कहा तिन को कहिये अतिमूढसो मूढ हैं। प्रेमसखी जिनसे ये नहीं ते बनाइ विरंचि धरै नरऊढ हैं ॥ १९ ॥

कवित्त—कोमल अमल मंजु रामजूके पायन की आँगुरी सघनराजैं सुखमा कतारैंसी। भुगुति मुकुति की बिराजी शुभ

राजी किधौं नखपत्र सहित सिंगारतरु डारैंसी ॥ पुन्यपात्र पूरन ह्वै उमगि उमगि आई सबसुखदायक अमृत जलधारैंसीं। प्रेमसखी मेरीजान दयादसरूप धारैं पाइ गृहद्वार आइ दीनन पुकारैंसी॥२०॥

चित्रित विचित्र एक एकतें अधिक एक अंकुशादि चिन्हनकी छवि न्यारी न्यारीहैं। तल अरविंदतें अरुनमंजुकोमल हैं मकरंद पूरन अभय व्रतधारीहैं॥ सुजस पराग मोद दसौ दिसा फैलिरह्यो दौरि दौरि आवैंभौर भक्त अधिकारी हैं। मातासे पितासे बंधु आपद सखासे प्रेमसखीके उपाय रामपाय हितकारीहैं॥ २१॥

कलपलताके सिद्धिदायक कलपतरु काम धेनु कामनाके पूरन करन हैं। तीनिलोक चाहत कृपा कटाक्ष कमलाकी कमलास-दाई जाकी सेवत सरन हैं ॥ चिंतामनि चिंताके हरन हारे प्रेमसखी तीरथजनक वरवारिज वरनहैं। नखविधु पूषन समन सबदूषनयेरघुवंशभूषनकेराजतचरनहैं२२

परम पुनीत राम पायन की पादुका हैं धौरैं जुगरूप परमारथ अरथकी। न-गन जटित प्रेमसखी छवि धामऐसी आ-पने प्रकास जोति जीते रविरथकी ॥ कौ-शिल्यादि रानी दासदासिनके पान की जमानसी पठाई समरथकी। महिमा अ-

पार कोउ पावत न पारावार भई सोकसा
गरकी नवकाभरथकी ॥ २३ ॥

करम कठिन रोग दूरि करवेके हेत
औषधी बनाई है सजीवानि की मूरिकी।
परसि निरोगभई गौतमकी नारी जिन
ओढनी सी ऐंचिडारी सिला अघभूरि
की ॥ जलके किनूका गिनि सिगरे बताउँ
महि रजबारूगिनि आंउँ नेरे अरु दूरि-
की। प्रेमसखी वानी सकुचानी कहैं बार
बार महिमा अपार राम पायनके धूरि-
की ॥ २४ ॥

सोरठा।

सोरघुवर पदरेनु, प्रेमसखी निजसिरधरै।

दासनकसिुरधेनु,जाहिनिगमआगमकहै॥

सवैया—नव अंवुद ते तन जोति बड़ी सिगरे अंग व्याहके साजलसैं । मुखकी उपमा कवि कौनकहै मुसुकानि सुधारस सेवरसैं ॥ पटपीतसौं जानकी चूँनरीसौ शुभगांठि विलोकत चित्त फसैं । यह दूलहरूपसियावरकी निति प्रेमसखी उरमाहवसैं ॥ २५ ॥

दोहा ।

अंसपरस्पर भुजधरे,निसिदिनपूरनकाम।
प्रेमसखीकेउरवसैं,सीयरामछविधाम॥१॥

चतुरंगसेना वर्नन दोहा ।

वंदीदौरिदिखायकैं, समै सुनायौ जाइ ।

अतिविनीतकरजोरिकै,वोल्योआयसुपाइ

कवित्त--प्रेमसखी कोकिलानकी वसी पुकारती हैं मंदगाति मारुत गयंदनिकौ साजु है। ठौरठौरवाजीसे विराजे वृक्ष किंसुकके प्यादेसे गुलमलता भ्राजतसमाजुहै॥ स्यंदन रसालजामैं रथीरतिनाथवैठौ फूलसर धनुहाथ भट सिरताजहै। महाराज रघुराज रावरे मिलनहेत सेना चतुरंग संग आयो रितु राजहै॥

सवैया--वौरझुके चहुँ घां अवलोकि ए मानौकरैजु वसंत जो हारहै। डारै रसालकी डोलैं सवै जनुराघव तेजतें कंपित मार है॥ सेवती कुंदनिवारी गुलावके फू-

लधरे सब भेट अपार है । प्रेमसखीकर जोरिखरोसबको हितुहै रितुको सरदारहैं२

छप्पै—नैन सैन तब दई शीश लीन्ही धरि अपने । माथनाइ तहँ चलो पुरुष देखत नहिं सपने ॥ सरजू पुलिन पुनीत मध्य यकबाग सोहाई । जहां बसत रति काम लताद्रुम वेष बनाई ॥ मणि जटित भूमि शोभा अधिक तहँ बसंत संततरहै। रघुनाथ सियाको केलिंथल प्रेमसखी कलिमल दहै ॥ ३ ॥

कवित्त—निकट वशिष्ठ जाके बिपिन प्रमोदचारु सोमरूपी विटप बिराजत बिशाल हैं। रुचिर सुधारी क्यारी कञ्चन

कमलकारी मणिनके ठौर २ बांधे आल बालहैं ॥ चम्पक चमेली एला ललित लवंग लता बकुल कदंबफूल सघन रसाल हैं । प्रेमसखी करत विहार रति कुंजन में जानकीजू साथ रघुनाथप्यारेलाल हैं॥४॥

प्रेमसखी तरुसबै फूलनके भारन सों लताबेली अरुझानी भूमि झुकिआईहै। त्रिविधि बहत वात सीतल सुगन्ध मन्द कुहूं २ बोलैं कारी कोकिला सुहाई हैं ॥ अलिनी अलिनसंग नलिनी निकुंजानिमें मत्त मधुपान फिरैं दशौदिशा धाईहैं। जनकसुताके अंश भुजदीन्हे रघुनाथ तिन बन बीथिनमें रमतसदाई हैं॥ ५ ॥

सवैया--मंडित है रितुराजसदा चहुँ घा खग कूजत फूले रसाल हैं । कुंज वने द्रुम वेलिनके मनु कामके राजैं वितान विसाल हैं ॥ रामासिया जुवती गनमैं भुज अंसनिदीन्हे विराजें कृपाल हैं । वाढतहै उरप्रीतिनई नितप्रेमसखी छविदेखि निहालहैं ॥ ६ ॥

कवित्त--कलपलता की वनराजी में विराजी चौक आयत विसाल देखि मोहत मदन हैं । चित्रित विचित्र मनि हाटक जटित भीति कहूंनगलागे कहुंगजके रदन हैं ॥ रंग रंग खंभा औ झरोखा भांति भांतिनके द्वारनपै परधे वहुमो-

लके छदन हैं । झालरैं बँधी हैं गजमो-
तिनकी चहुँ ओर प्रेमसखी दंपति वि-
हारको सदन हैं ॥ ७ ॥

रतन सिंहासन द्रुतासन के अनरूप
शेश न बखानिसकैं जाके सतमाथ हैं ।
सिद्धिन समेत फलचारि परे चाऱ्यौओर
ध्याइपाइ होतजीव तुरत सनाथहैं ॥ प्रेम
सखी वीजमन्त्र मणिसे जरेहैं जामैं चारो
वेद पायोजो कहत गुणगाथहैं । नाथनि
को नाथ जो अनाथनिको नाथआपु जा-
नकी समेतजापैं राजैं रघुनाथ हैं ॥ ८ ॥

गोरेश्याम अंग रतिकोटिन अनंगसंग
जाकी छविदेखि होत लज्जित बिचारे हैं।

चंदकैसो भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी नासिकासुहाई नैनजोरछोरवारे हैं॥ ओठ अरुणारे तैसे कुंदसे दसनप्यारे ललित कपोलनपै कच घुंघुरारे हैं। अंशभुजधारे दोऊ नील पीत पटधारे प्रेमसखी राम सिया जीवन हमारे हैं॥ ९॥

छप्पै--मुकुट शीश नगजटित चन्द्रिका अधिक सोहाई। कुटिल अलक भ्रु किरही कपोलनपर छविछाई॥ मंद मंद मुसुकात दोऊ चितवत तिरछो हैं। लट कन मन हरिलेत ललित अधरनपरसो हैं॥ प्रति अंग अंगसोभा अधिक प्रेम-सखी हियमें रहै। मन मुदित होत गुड

खाइज्यों गूँग स्वाद कैसे कहैं ॥ १० ॥

दोहा ।

दंपतिछविकछुमैंकही,रहीयथामतिमोरि ।
प्रेमसखीअबकहतहै,सखीसखीननिहोरि॥

सवैया--छत्र विराजतचन्द्रमासों गहि चन्द्रकलाकर आपु खरी है। चौंर लिये कमला विमला दोउ ढारत हैं ओसरी ओसरी हैं ॥ पास खरी सुभगा सुथरी वातियां कहती कछु पाइधरी हैं । पान खवावत प्रेमसखी सियके पियको अनुराग भरीहै ॥ १२ ॥

कवित्त--कामकी लतासी चपलासी काम अवलासी विमलासी चारु जाकी

चेरिनकी चेरी हैं। प्रेमसखी कै यो कोटि सुभगा समानसखी रंभासी गनावै कौंन वैसी बहुतेरी हैं॥ प्रेमसों पगीहैं रसरूप उमगी हैं मानौ पंनगी नगीहैं पांति पांति चहुंफेरी हैं। सौंजले खरी हैं सब अंग सुथरी हैं मानौं चित्र पूतरीहैं परिचारि सिय केरी हैं॥ १३ ॥

वीनाको वजावैं कोउ मीठे सुर गावैं कोउ भावकोवतावै सब अंगनि नबाइकै। कोउतालधारी कोऊ लेतगति न्यारी न्यारी कोऊ सुकुमारी मुसुकात हाउ भाइकै॥ कोऊमान कीन्हे कोऊ तनमनवारि दीन्हे कोऊ मुखदेखैं कोऊ रहत लजाइकै। प्रेम

सखी रामसिया वरन विलोकि होत मन
मैं मुदित जैसे रंकनिधि पाइकै ॥ १४॥

सोरठा ।

फूलेदेखिरसाल,हियहुलसी विलसीसवै ।
भरिभरिगोदगुलाल,अलीफागखेलनचली।
आवतदेखीराम, सखी सबैं सियसंगकी ।
कोटिकामअभिराम,मंदमंदहँसिउठिचले॥

दोहा ।

रामबुलाए सखागन, सबै कामके रूप ।
आएपिचकारी लिये,केलिकलहअनुरूप।
सखिनमध्यश्रीजानुकी,सखनमध्यरघुनंद॥
प्रेमसखीबाढतहिये,लखिलखिपरमानंद।
जूथ जूथ ठाढे भये,सखा सखी विलगाइ ।

बाजेसवै बजाइकै, उठी अलीगनगाइ १९।

कवित्त--होरी खेलिवेकों खरी जानकी सखीनमध्य रोकै कौनप्रेमसखी उरके अनँदकों। आस पास जूथ जूथ जुवती समूह ठाढीं गीत मिसिगारीदेत सिगरी गोविन्दकों॥ अंगनि झुकाए कछु मंद मंद मुसुकात चन्द्रिका झुकीहै मत्त मानौ जीतिचंदको। प्रेमते पगीहैं रसरूप उमगी हैं अलि अंसते लगी हैं करलीन्हें अरविंदकों॥ २०॥

प्रेमसखी जानकी को वदन मयंक देखि उपमा वतावै कैसे चन्द्रमा विचारेकों। कंजते अमल मीन खंजनतें चंचलहैं मैन

सर सकुचातनैन अनियारेकों ॥ नासि-
का सुहाई शुकनासिकाकी छीनी छवितर-
लतरौना जुतरैनिउजियारेकों । लटकन
लटकिछवीलीके अधरपर मानहुं चुनौती
देत जुलफन वारेकों ॥ २१ ॥

सवैया-लाललिये पिचकाकरमो भए आ
पुखरे सियसामहैं आइकैं। तैसी बढी मुख
की सुखमा विधु पूरन सीत निसाजनुपा
इकैं ॥ पीतदुकूलकसे कटिमैं जिनते विज
री दविजात लजाइकैं। प्रेमसखी हियमें
वह माधुरी राखत ज्यों निधिरंकचोराइ
कैं ॥ २२ ॥

प्रेमसखी सीसपैं किरीटकी चटकतैसी

हलकैं कपोलपैं सुगन्ध भीनी अलकैं। ओठ अरुनारे तैसे कुन्दसे दशन प्यारे कुंडल कनकगंड मंडित ह्वै गलकैं॥ लोचन विसाल लाल कुंकुम तिलकभाल नासिका बुलाकपैं अधिक छवि छलकैं। तन घनश्याम कोटि कामहूंते अभिराम राम रूप देखि आली परती न पलकैं॥ २३॥

दोहा।

सियारामशोभाअवधिवरनिसकैकबिकोइ।
प्रेमसखीठाढेदोऊ दृगनफागसीहोइ॥२४॥

कवित्त—कुटिल कटाच्छ पिचकारीसी चलतचारु दुहुँओर नेहको उमंगरंगबोरी हैं। पलकैं परत मानौ दुरत करत चोट

मंदमुसुकानि गहिपानि झकझोरीहैं॥ भा
वकै बचावैं हाहा हावकै खवावतीहैं वदन
विलासतें करत बरजोरी हैं। देखि देखि
आजु छबि प्रेमसखी दंपतिकी नैनन तें
होरी खेलैं कुंवर किशोरी हैं॥ २५॥

सवैया—भूषण भूषित संग सखा इत
संग सखीसब कीन्हे सिंगारहैं। को बरनै
तिनकी छविकों बहुरूप धरैं बिलसैं रति
मार हैं॥ लीन्हे उतै पिचका कर में इततें
बहुफूल के गेंद अपार हैं। प्रेमसखी
सिय के पियके ढिग ठाढे भये सब खे-
लनहार हैं॥ २६॥

कवित्त—बाजेकों बजावैं भूमि २ फागु

गावैं विंग बचन सुनावैं एक एकनि सों करखैं। झुकि२ आवैं चाव अधिक बढावैं नैन तुरंग नचावैं रसमत्त हिये हरखैं ॥ फागुरंग प्रेमसखी बादरसे छाइरहे चढिकै विमानतैं सुमन सुर बरखैं। रंग शस्त्रधारी वस्त्र भूषण सिलाहकारी बारबार रामसिय भौंहनिकौं परखैं ॥ २७ ॥

राम रुषपाइ धाइ आए कुँअरोटासब कंचन कलित रंगभरी पिचकारीहैं। प्रेम रस मत्तवै गुमान गुन जोबनको करषि करषि चली फौजें न्यारी न्यारीहैं॥ एकै कहैं जीतिसौंज सगरे छिनाइलेहु एककहैं ठाढीहोत अवला विचारी हैं। प्रेमसखी

लोने लोने छैल देव छौना ऐसे बोलि बो-
लि चले जौति अवध विहारी हैं ॥ २८ ॥

दोहा ।

जौविदेहजाजनकजा, कुजा भूमिजानाम।
जयरघुवर प्रियवल्लभा,जै जै बोलतवाम॥
पियदलआवत देखिकै,मंदमंदमुसुकाय।
नैनसैन दीन्हीसिया,चली सखीहरषाइ॥

कवित्त—सायकसेप्रेमसखी चंचल च-
लतनैंन भृकुटी विलास तौ धनुष बनि
आई हैं। गोली गोला हावभाव विंग के
वचनवान मंदमुसुकानि जानि सेहथी सु-
हाईहैं ॥ अलकैं सुगन्धभीनी झलकैं कृ-
पान ऐसी तरलतरौना जूसिपरछविछाई

हैं। नूपुर नगारेभारे होरी जंगजीतिवेकों सुभट वधूटिनकी फौजें उठिधाईहैं॥ ३१॥

सवैया—चोवनके चुरुवाइततें अलिडारैं गुलालकी मूठि अपारहैं। केसरि रंग भरे सिगरे पिचकानिकी मानो रही जुरि धारहैं॥ प्रेमपयोधिमे जाइपरे वहिकै सगरे सुर देखनहार हैं। प्रेमसखी न टरै रसमत्त इतै नृपजा उतराज कुमार हैं३२

घनाक्षरी—लाखनके लाख लाख सखी एक एक बार मारै कुमकुमा जाइपरैं करकासी हैं। फूलनके गेंदा फेकि फौंजै फोरि फारि दीन्ही निकसी कृपानसी कनकलौं कलासीहैं॥ चोट न बचाइ चोट करती

बधूटीसवै प्रेमसखी चमकि चमकि चप-
लासी हैं। पावत न सास चलै सखागन
वावरे ह्वै तौपिकै गुलाल कीन्हे सगरे नि-
सासी हैं ॥ ३३ ॥

दोहा।

ललकारे लोने लखन, भयेप्रवलबलपाइ।
सालढाल आगैंदिये, जुरेसामुहैं आइ३४

सवैया—फूलछरी तरवारि चली उततें
पिचकाभरि मारत तीरहैं। भीजिगई रंग
तें सिगरी विथरी अलकैं न सँभारत चीर
हैं ॥ शस्त्र प्रहार सहैं सिगरे भट रोसभ-
रे नगनै तन पीर हैं। प्रेमसखी प्रमदा
गनमत्त खरे मानौ घायल घूमतबीरहैं३५

घनाक्षरी--सौंह सुनि सुभगा की दा-
मिनीसी दौरि दौरि कामिनी लपटिगईं
सबै सुकुमारेसों ॥ गहि गहि ल्याई जो प्र-
वल घरहांई सब होरी होरी कहत किशो-
री न्यारे न्यारेसों । प्रेमसखी गुलचाइ सि-
गरे नचाइ दीन्हे जुवती बनाई बहू कहत
विचारेसों । अंजन अँजाइ हमचूरी पेन्हि
पेन्हि आईं कहियो हजूरिजाइ पीतम ह-
मारेसों ॥ ३६ ॥

जनक दुलारीकी सहेली अलवेली
एक लाडिले लषनसों गुमानभरी झग-
री । दूसरी चतुरवेष पुरुष बनाइ आई
जाइ राम पास ठाढी भई छवि अगरी ॥

तीसरी तुरत दौरि वेदी माल भरतके लाई रिपुसूदन की लई छीनि पगरी। बात कहवेके मिसप्यारेको वदन चूँवि भागि आई तारीदै हँसन लागीं सगरी ॥ ३७॥

सवैया--और सहाइ गई प्रमदा सौ मित्रकौं ल्याई सखी एहि ओरकों। भाग बडे इनके कहिये तियकी छवि दीजिये राजकिशोरकों॥ आजु खवासी करौंसियकी जुवती तनधारि खवावोतमोरकों। दासी सवै हमव्हैं लला इततें भरतारकहौ चित चोरकों॥ ३८॥

वानि हैं विश्वके पोखनकी तिनको भरतार कहे कछु हानि है। हानि हैं प्रेम

सखी कबहूं जिनकों सिय आपुसखीकरि मानि हैं ॥ मानि हैं ताहि विरंचिसदा जिनपै सियकी सियरी दृगजानि हैं । जानि हैं जानकी जीवनतौ जिनकै सियजू की सिपारसि वानिहैं ॥ ३९ ॥

लायक दास खवासनहीं अब मानिहैं कीन्हे करोरि उपाय हैं । पाय बिना हम देखे नहीं अंग जानकीके कहिदेत सुभाय हैं ॥ भायतें पूजत प्रेमसखी शिव आदि मुनीशनकी समुदाय हैं । दाय उपाय यहै सगरी सियके पद पङ्कज में चितलाय हैं ॥ ४० ॥

दोहा ।

बातन कैसे जीतिहैं जानत हैं हम सेस ।

देवरजाइनपाइहौ बिनाकियेतियवेस४१।
देवर देवर कहतहौ कहाकरौ बर और।
वरदराजवरपाइकै वरदनकौसिरमौर४२।

सवैया—कञ्चनकी गुजरी विछियां तुम को लहँगो अँगिया पहिराइहौं। कंचुकी साजु खवाइ विरी पहिराय चुरी अवतंस बनाइहौं॥ मांग सँवारिकै प्रेमसखी शिर सेंदुरदै फिर अंक लगाइहौं। दै तिय को छबि सुन्दरजू हम लाडिली जूके हजूरि नचाइ हौं॥ ४३॥

दोहा।

अंचलओट हँसीसबै मंदमंद मुसकाइ।
कमलनैनकेदृगनमेंअञ्जनरुचिरबनाइ॥४४॥

कवित्त–जावक लगायो जलजातऐसे पायन्तमें बीछिया कलित ह्वै अधिकछबि छाई है। घूमिरह्यो घेरवारो लहँगो सबज रंग नीलंजरतारीसारी कंचुकी सुहाईहै॥ प्रेमसखी अंग अंग भूषण विविधिसाजि वहूबहू कहत वधूटी गहिल्याईहै। सुभगा सखी सियाजूके तुरतहजूरि कियो नवल बधूटी एक सासुरेते आई है॥ ४५॥

दोहा।

जनकलडैतीहँसिकह्यो, फगुआदीजैलाल।
सेसहमैंसबकहतहैं, तिंहुँपुरमेंतिंहुंकाल४६
सखीकह्योतियरूपह्वै, कीजै यहांविलास।
प्रेमसखीबोलेलषन, हमसियपियकेदास॥

सवैया--साँसतिहोत वडीतिनकी नित जो रघुनाथको दास कहावत । सेवत हैं पद पंकजको मकरंदापियै अलिहूवै गुन गावत ॥ मर्दितहै कमला करसों तिन को यह वेद पुरान बतावत । प्रेमसखी सियके पद सेवत ते वासि रामहिये सुख पावत ॥ ४८ ॥

दोहा ।

देखतलछिमनकीदसा,हियेबहुतहरषाइ ।
लालकह्योरिपुदवनसों,मंदमंद मुसुकाय ॥
रसिकसिरोमणिहँसकह्योजनकसुताढिगजाय।
वांहआपनेदीजिये,ल्याबोसखीबुलाय ॥४९॥
रिपुसूदनतबहँसिकहो,भलीकहतहौनाथ।

रहेतुम्हारेनिकटहीं, भयेउघारेमाथ॥५०॥
आयसु मेटीजातनहिं, कीन्होहृदयविचार।
पुरुषोत्तमविनुहैनहीं, उहांपुरुषअधिकार।५१।
वनिता रूपबनायकै, पहुंचे जाइ तुरंत।
प्रेमसखीठाढेजहांजुवतीवेषअनंत॥५२॥
कैप्रणामबोलेबचनसियअनुशासनपाइ।
लालबुलाईअलीयकजैयेतुरतलवाइ।५३।
सवैया—हंस वधूसी गुमानभरी गतिमंद चलै मिसकै मुसुकात हैं। कांपे उरोजहरा हलकैं झलकैं मुख भूषणके जलजातहैं। भीनी सुगंध लसैं अलकैं ललकैं जिय देखि भुअंग लजातहैं। प्रेमसखी सुभगा सुथरीसियके ढिगतेपियकेढिगजातहैं५५

कवित्त—आवतनिकट अवलोकि छवि सांवरेकी जाके आगे झांवरोसोलागैनिशि नाथ हैं। कंध टेकिठाढे लघुवंधुके गुलाल भरे आस पास कामसे बिराजैं सखासाथ हैं॥ हँसिकै नवायो माथ पायनको प्रेम-सखी पूछत कुशलदेखि बदन सनाथहैं। तन मन बैन गति रावरी कमलनैन प्रेम रसमाती खरी जोरे जुगहाथ हैं॥ ५६॥

दोहा।

सुधि आईवाबातकी, कह्योलालमुसुकाइ।
छलबलआवतियनकौं, तासौंकहावसाइ॥
छलीकौनसौं कहतहैं, कहैभरतजून्याइ।
वावन वटुहूवैवलिछले, आपुछलिनकेराइ॥

जनक दई तजि ताहिकों, रमत औरसँगवाम।
सुन्दरकेढिगजातहौ, तातेंशुभगानाम ५९
रमतसबनतेरामजू, नेकु नहृदयलजात।
लोकसार-माधव तुम्हैं, कहैंजनकजामात॥
सुभगचातुरीकेवचन, सुनिसुभगाकेराम।
पानदयेआदराकिये, कोटिकामअभिराम६१
पियरुषसुभगासखिनतें, डीठिहँसोहीकीन्ह।
कहतदंडवतदंडवत, सीसदंडवतदीन्ह६२

सवैया--सौंहनहरैं तिरीछे तकैं सुभगा कहँ देखत जात गडे हैं। कंचुकी चित्र लसै लँहगा पहिरे तिय भूषन छोटे बडे हैं। केलिके हेत कलानिधि राम उतारन देत न तैसे मडे हैं। प्रेमसखी प्रमदान

केवेष विराजैंसखा पियपास खडेहैं॥६३॥

दोहा।

सखनदिखावतआरसी,सुभगाहँसतअसंक।
कहावनीछविआजुकीदेखोवदनमयंक६४
आई गौनेसीमनौ,नवदुलहिनिततकाल।
सखासुनतसकुचतसबै, हँसतछवीलेलाल६५
नहिंतपव्रतजपजोगतें,नहिंसाधनतेकोइ।
उज्जलरसअधिकारयह,सियाकृपातेंहोइ॥
शिवविरंचिदेखेनहीं,जोथलसुरसमुदाय।
सखीवेषधरिसहजही,सोथलदेखोजाय॥६७॥
सखाकहतसुभगासुनहुँआजुतुम्हारोदाउँ।
जुआयुद्धजीतेजोई,सूरचतुरतोहिनाउँ६८॥
सकुचभरे पेखेसखा,सभगापियपहँजाइ।

मंदमंदहँसिकरगह्यौ,सियढिगचलीलवाइ।
आवत देखे जानकी, प्रानपियारे लाल ।
आईखेपअनाजकी,मानौपरेदुकाल॥७०॥

कवित्त—नूपुरकी धुनि मंद गाजत व-
लाहक से तडित वसन कोटि काम अ-
भिराम से । पीत उपवीत सोई मघवास
रासन है मोतिन कै माल हिये राजैं वक
दाम से ॥ प्रेमसखी सखी मत्त मोर ऐसी
नाच उठी वरषैं मुदित ह्वै सुमन सुरधाम
से । चातकसी पिय पिय सिगरी पुका-
रत हैं तन घनस्याम राम आवैं घन-
स्याम से ॥ ७१ ॥ सोरठा ।

पियढिगआवतदेषि,सियाजाइआगेलियो ।

चक्रवाकजनुपेषि, जनुचकईवीतेनिसा ७२

कवित्त—होरीको लगाइ आई कुँवरि किशोरी सब मिला मिलीचारकै पसारि भुजा भेटती । कुंकुम कपूर धूरि अभ्रक गुलाल पूरि जुवती करन लै लिलाट मैं लपेटती ॥ एकै तृन तोरैं एकै हँसिकै वदन मोरैं एकै मिलपाई वर भुजा वस भेटती । एकै हर्ष पाई प्रेमसखी पिय ढिग आई हिय मैं लगाइ कै विरह विथा मेटती ॥ ७३ ॥

दोहा ।

भालगुलाललगाइकै, सियपियहियेलगाइ।

सुखआसनबैठेनिरषि, प्रेमसखीवलिजाइ॥७४॥

सवैया—गावत वालम राग सखी ग-
ति भेदतैं वाजन लागो मृदंग हैं। को
वरनै तेहि औसर को सुख छाइरहे स्वर
ताल तरंग हैं॥ राम सिया छविऊ उर
मैं बलिहारि करो रति कोटि अनंग है।
प्रेमसखी छवि दंपतिकी हियमें छहराइ
रह्यो वह रंग है॥ ७५॥

राग भयरो।

सिया वोलाये सखा सहित अनुराग।
दै असीस पट भूषण उचित विभाग॥१॥
लछिमन कहि रिपु दवन स्वस्ति सुख
मूल। पट भूषण पहिराय जानि सम

तूल ॥ २ ॥ चले चन्द्र मन मुदित छु-
दित मन नैन । सिया रूप उर धारि राम
सुख अैन ॥ ३ ॥ सखिन कह्यौ पठइ
करि फागु अब देहु । विहँसि कह्यौ रघु-
नाथ जथा रुचि लेहु ॥ ४ ॥ स्वागत
यह करजोरि सिया सियनाहु । प्रेमसखी
हिय वसहु दिये गलबाहु ॥ ५ ॥ संपूरन
यहि छबि मगन, रसिकन पूरन काम ॥
जन्म लाभ जग मांह यह भजिये सिय
सियराम ॥

इतिश्री प्रेमसखीकृत सीताराम
नखशिख सम्पूर्णम् ।